ISSN 2319-6785
वर्ष 29 अंक - 6
फरवरी-मार्च 2018

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे.

हिंदी पढ़ो, आगे बढ़ो और भारत जोड़ो.

Scanned by CamScanner

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली की आर्थिक सहायता से प्रकाशित राष्ट्रीय स्तर की हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

ISSN 2319-6785 Rashtravani

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

वर्ष 29 अंक -6

फरवरी-मार्च : 2018

-: संपादक मंडल :-

पूर्व अध्यक्ष - प्राचार्य सु. मो. शाह

कार्याध्यक्ष - डॉ. वीणा मनचंदा

-: सहायक :-

डॉ. मु. ब. शहा **डॉ. नीला बोर्वणकर**

डॉ. निशा ढवळे **डॉ. ऋचा शर्मा**

राष्ट्रवाणी सदस्यता शुल्क :-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' के नाम से भेजिए।

प्रति अंक : रु. 50/- **पंचवार्षिक** : रु. 1000/-

द्वैवार्षिक : रु. 500/- **दस वर्ष के लिए** : रु. 1500/-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट भेजने का पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे -

राष्ट्रभाषा भवन, 387 नारायण पेठ, पुणे - 411030

दूरभाष : 020 - 24458947 / 24454268

संलग्न पत्र में शुल्क का प्रकार,

अपना पूरा नाम और पिनकोड सहित पूरा पता, दूरभाष क्रमांक लिखिए।

प्रबंधक :- सौ. वंदना ठकार, सौ. सुनेत्रा गोंदकर

प्रकाशक, मुद्रक :- शे. आ. जगताप, सचिव,

मुद्रणस्थान :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, मुद्रणालय

387, नारायण पेठ, पुणे - 411030

राष्ट्रवाणी साहित्यिक-समीक्षात्मक पत्रिका है। यह जरुरी नहीं कि लेखकों के विचारों से संपादक सहमत हो। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का स्वामित्व-अधिकार पत्रिका का है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

फरवरी – मार्च 2018

1.	संपादकीय...श्री. गो. म. दाभोलकर	प्रा. सु. मो. शाह	2
2.	हिंदी उपन्यास साहित्य को महाराष्ट्र का योगदान	प्रा. अशोक साळुंखे	8
3.	धूमिल के काव्य में राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक व्यंग्य	प्रा. सुनिता साळुंखे	13
4.	विज्ञापन एजेन्सी के महत्वपूर्ण कार्य	डॉ. एस.के.खोत	17
5.	राष्ट्रिय एकता संदर्भ और कबीर का काव्य दर्शन	श्री. भुपेंद्र निकाळजे	21
6.	''हिंदी भाषा और इंटरनेट : स्थिति और गति''	श्री. दीपक तुपे	24
7.	संचार माध्यमों की भाषा (आकाशवाणी के विशेष संदर्भ में)	श्री गोपाल अवटी	32
8.	हिंदी की साहित्यिक वेब पत्रिकाओं का विकासात्मक परिदृश्य	प्रा. बहिरम गनभाई	35
9.	भारतीय ग्राम विभिन्न कालों में	डॉ. तरन्नुम बानो	39
10.	हिंदी भारत देश में	डॉ. ओमप्रकाश झंवर	45

Scanned by CamScanner

''हिंदी भाषा और इंटरनेट : स्थिति और गति''

प्रा. डॉ. दीपक रामा तुपे (मो. 8793878240)
विवेकानंद कॉलेज (स्वायत्त)
कोल्हापुर 416003

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में किसी भी लिपि के सहारे सूचनाओं का आदान-प्रदान करना 'संचार' कहलाता है। संचार की यह प्रक्रिया मनुष्य के साथ-साथ वनस्पति तथा पशु-पक्षियों में भी होती रही है। लेकिन मनुष्य प्राणी बुद्धिमान होने के कारण उन्होंने संचार के क्षेत्र में अलौकिक परिवर्तन किया है। प्राचीन काल में बोलने, पढ़ने, लिखने, सुनने, देखने विचार-विमर्श करने, अपने मतों, धारणाओं, अनुभवों को व्यक्त करने पर 'संचार' होता था। लेकिन इन माध्यमों के सहारे संचार एक ही स्थान पर होता था । दूर रहने वाले मनुष्य तथा समुदाय तक संदेश पहुँचाने में बाधा आती थी। इसीलिए मनुष्य ने प्रथमतः आवाज देना, घंटा या बिगुल बजाना, शिलालेख, टॉवर, ऊँट, घोड़ा, कबुतर, डाकिया आदि के साथ-साथ रेल तथा मोटारगाड़ियों को अपनाया। लेकिन आधुनिक काल में पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कंप्यूटर, टेलीग्राम, टेलीप्रिंटर, फैक्स, टेलीफोन और इंटरनेट आदि संचार के साधनों ने उपग्रह संचार प्रणाली के जरिए अभूतपूर्व क्रांति ला दी है। इस संचार के लिए किसी एक भाषा और एक माध्यम की नितांत आवश्यकता होती है। लेकिन आज आवश्यक कार्य भाषा के रूप में हिंदी और माध्यम के रूप में इंटरनेट ने बखूबी निभाया है।

1. क्या है इंटरनेट?

इंटरनेट कोई आविष्कार न होकर कंप्यूटर और टेलीफोन कनेक्शन से बना एक संजाल है। सूचना का संचार करने के लिए उपयोग में लाया जानेवाला तकनीक है, जिसके द्वारा सूचना का निरंतर आदान-प्रदान होता है। इंटरनेट बहुत से स्थानीय नेटवर्क का मिला-जुला रूप है। डॉ. प्रतिभा पाठक के अनुसार ''विश्व में अलग-अलग स्थानों पर स्थित अनेक कंप्यूटरों को एक नेटवर्क के द्वारा आपस में जोड़ा जाता है। इस नेटवर्क के माध्यम से सूचना के संचार के लिए बनाई गई एक-एक विशेष प्रकार की प्रणाली ही इंटरनेट कहलाती है।''[1] इंटरनेट अनेक नेटवर्क का नेटवर्क है और जालों का महाजाल भी। आज इंटरनेट संवाद स्थापित करने या सूचना का आदान-प्रदान करने के लिए विकसित किया गया 'ग्लोबल संजाल' है।

2. इंटरनेट का आरंभ

इंटरनेट का जन्म सन् 1969 में हुआ है। अमेरिका के उन्नत रक्षा अनुसंधान परियोजना एजेंसी ने कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों को अनुसंधान करने के लिए परियोजना दी थी उसका विषय था- 'दो या अधिक कंप्यूटरों के बीच संवाद कैसे स्थापित हो?' वस्तुतः अमेरिका की रक्षा अनुसंधान परियोजना एजेंसी को परमाणु हमले या प्राकृतिक विपदा होने पर भी संचार का कार्य कायम रहने के लिए एक माध्यम चाहिए था। इस परियोजना में लियोनार्ड क्लीनराक नामक शोध छात्र को सफलता मिली। आज वह कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में इसी विषय का

Scanned by CamScanner

प्रोफेसर है। इसी संस्था ने इस परियोजना को नाम दिया- इंटरनेट।

3. इंटरनेट का विकास

इंटरनेट का आरंभ होने के बाद आगे निरंतर उसका विकास होता रहा। सन् 1970 में अमेरिका के उन्नत रक्षा अनुसंधान परियोजना एजेंसी ने सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए ' इंटरनेट प्रोटोकॉल' विकसित किया, जिसके द्वारा एक पर्सनल कंप्यूटर दूसरे पर्सनल कंप्यूटर के साथ संदेश तथा सॉफ्टवेअर कार्यक्रमों का आदान-प्रदान करने में समर्थ हो गया। सन् 1971 में यह योजना पाँच विश्वविद्यालयों में स्थित केंद्रों को इसी नेटवर्क के सहारे जोड़ दी गई, जिसके सहारे संदेशों का आदान-प्रदान किया जाने लगा। शीघ्र ही इंटरनेट का यह आविष्कार अमेरिका के रक्षा विभाग से बाहर निकलकर माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम, एपल तथा नेट्स्केन जैसी कंपनियों के पास पहुँच गया। सन् 1980 के उत्तरार्ध में डॉ. बर्नसली ने पत्रों एवं दस्तावेजों को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने की सुविधा विकसित की। यही सुविधा आगे इंटरनेट से जुड़े कई कंप्यूटरों के बीच में संपर्क स्थापित करने में सफल हो गई। साथ ही आगे 'हाइपर टैक्स मार्कअप लैंग्वेज' विकसित किया गया। सन् 1992 में वेबसाइट में लिखित सामग्री का अंतरण करना संभव हो गया। मार्क एंडरसन ने 'मोजाइक' नामक कंप्यूटर प्रोग्राम नेशनल सुपर कंप्यूटिंग अनुप्रयोग केंद्र में विकसित किया, जो पहला वेबब्राउजर था। बाद में आर्यी, बेरॉनिक जैसे सर्च इंजन बनाए गए। इन सर्च इंजन के सहारे विभिन्न वेबसाइटों में पहुँचना बहुत ही आसान हो गया। आगे विश्व व्यापी वेब का भी विकास हुआ। गत 3-4 सालों में इंटरनेट के विकास की गति और कारण स्पष्ट करते हुए डी.डी. ओझा और सत्यप्रकाश कहते हैं-''विगत 3-4 वर्षों में इंटरनेट का विकास बहुत तेजी से हुआ है। इसके मुख्य कारण हैं- पर्सनल कंप्यूटर का जीवन के हर क्षेत्र में उपयोग, हार्डवेअर के गिरते मूल्य तथा इसमें प्रयुक्त मोडेम की प्रौद्योगिकी में उत्तम विकास। एक अन्य कारण वर्ल्ड वाइड वेब का विकास था, जो शब्दों, चित्रों तथा ध्वनि की सहायता से किसी विशेष व्यक्ति, संस्था अथवा विषय की सूचनाएँ देनेवाले तथा एक-दूसरे से जुड़े लाखों कंप्यूटरों का विश्व व्यापारी संग्रह है। इसमें एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसका प्रयोग कोई साधारण व्यक्ति भी आसानी से कर सकता है।''[2]

4. विश्व व्यापी वेब (World Wide Web)

विश्व की असीम जानकारी 'विश्व व्यापी वेब' पर उपलब्ध होती है। वांछित विषय की वेबसाइट खोलते ही वांछित जानकारी मॉनिटर पर उपलब्ध होती है। वेब साइट के अंतिम तीन अक्षर महत्त्वपूर्ण होते हैं जो वेबसाइट का प्रकार बता देते हैं। Com-कमर्शियल ऑर्गेनाइजेशन, Org- कंपनी या संस्था, edu- शैक्षणिक संस्था, in- भारत, 'au'-ऑस्ट्रेलिया और 'uk'- ब्रिटेन आदि संकेत चिह्न के द्वारा वेबसाइट का प्रकार समझ में आता है। 'हाइपर टैक्स प्रोटोकल'(http) के जरिए हम वांछित जानकारी हासिल कर सकते हैं। अगर किसी व्यक्ति को इस प्रक्रिया का पता नहीं, तो वह सर्च इंजन का सहारा ले सकता है, जो अपने काम की वेबसाइट बता देगा। आज इंफोसीक, आर्ची, लाइकोसिक, वैशनिका, गोफर आदि सर्च इंजन लोकप्रिय हैं। 'याहू' दुनिया का बहुत

Scanned by CamScanner

बड़ा सर्च इंजन है। आज वेब इंटरनेट का अहम भाग बन गया है। वेबसाइट के बढ़ने के कारण उसका विज्ञापन करना पड़ रहा है। इसी कारण पत्र-पत्रिका, टेलीविजन पर वेब पतों का विज्ञापन दिया जाता है। शुरू में इंटरनेट पर लिखित सामग्री ही उपलब्ध थी। लेकिन अब चित्र, ध्वनि और संगीत भी दिखाई दे रहा है- मनोरंजन की दुनिया में तो इंटरनेट कमाल की क्रांति लाया है। नेटवर्क के सहारे आज डाटा, आँकडे, जानकारी को एक स्थान-से-दूसरे स्थान तक भेजा जा सकता है। विश्वव्यापी वेब के जरिए आज अनेक न्यूज देनेवाले नेटवर्क 'न्यूजसेट' नाम से जानने-पहचानने लगे हैं। न्यूजनेट के द्वारा हम अपने सवालों के जवाब भी प्राप्त कर सकते हैं और अपने विचार भी भेज सकते हैं।

5. टेली कॉन्फ्रेंस: (Tele Conforence)

टेली कॉन्फ्रेंस प्रणाली के द्वारा विभिन्न स्थानों पर बैठे व्यक्ति कंप्यूटर के सहारे सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं। ऑडियो कॉन्फ्रेंस में सहभाग लेने वाले आदमी आपस में वार्तालाप कर सकते थे किंतु देख नहीं सकते थे लेकिन अब वीडियो कॉन्फ्रेंस में लोग एक दूसरे को देख भी सकते हैं और वार्तालाप भी कर सकते हैं। डॉ. प्रतिभा पाठक के मतानुसार-''संचार साधनों के द्वारा दो या दो से अधिक स्थानों पर तीन से अधिक व्यक्तियों द्वारा परस्पर विचार-विमर्श करना टेली-कॉन्फ्रेंस कहलाता है।''[3]

6. फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (File Transfer Protocal)

इस सुविधा के अंतर्गत एक कंप्यूटर पर संगृहीत फाइल इंटरनेट से जुड़े किसी भी दूसरे कंप्यूटर पर भेजी जा सकती है। फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल के द्वारा दूरस्थ कंप्यूटर में होने वाला डाटा, आँकड़े, जानकारी उपलब्ध फाइलों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजा जा सकता है, इतना ही नहीं उस जानकारी को देखा भी जा सकता है और उसमें मनचाहा बदलाव भी किया जा सकता है।

7. इंट्रानेट: (Intranet)

बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपने मुख्य कार्यालय तथा अन्य शाखा के कार्यालयों में सूचना का आदान-प्रदान करने के लिए इंट्रानेट सुविधा का प्रयोग करती हैं। लेकिन यह सुविधा सिर्फ कंपनी के कर्मचारी, सदस्य या जिसके पास वेबसाइट खोलने का अधिकार है उन्हीं लोगों के लिए होती है। इसके दो भेद हैं- एक इंट्रानेट के लोकल एरिया नेटवर्क (लैन) और दूसरा वाइड एरिया नेटवर्क (वैन)। यह सुविधा बहुत कम लोगों के लिए होती है फिर भी स्टेशनरी तथा रुपयों की बचत, कंपनी की उत्पादकता और क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से यह सुविधा उपादेय सिद्ध हो रही है।

8. ई-मेल: (Electronic Mail)

ई-मेल को इलेक्ट्रॉनिक मेल भी कहा जाता है। ई-मेल पत्राचार की अगली कड़ी है। यह एक ऐसी डाक प्रणाली है किसी कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे कई क्षणों में संदेशों का आदान-प्रदान करती है। ई-मेल के द्वारा एक ही संदेश एक साथ कई व्यक्तियों को भेजा जा सकता है। इसके लिए कंप्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन के साथ-साथ वांछित व्यक्ति या संस्था का पता होना आवश्यक है तब ही आप वांछित संदेश भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं। भेजा गया ई-मेल वांछित पते के मेल बॉक्स में पहुँच कर संकलित होता है। यह संचार का अत्यंत तीव्र और सस्ता माध्यम है। लेकिन

Scanned by CamScanner

शर्त यह रहती है कि पासवर्ड की गोपनीयता रखनी पड़ती है, नहीं तो आपके ई-मेल कोई भी पढ़कर उसका लाभ उठा सकता है। हिंदी में भेजा गया प्राप्त करने वाले कंप्यूटर में हिंदी फॉन्ट का होना जरूरी होता है, लेकिन अब 'सी-डैक' ने 'इज्म' सॉफ्टवेअर के द्वारा यह सुविधा ग्यारह भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराई है, जिसके कारण फॉन्ट्स डाऊन लोड करने की आवश्यकता नहीं रही है। आज याहू, रैडिफमेल, इंडिया टाइम्स, हॉटमेल आदि प्रमुख वेबसाइट 'ई-मेल' सुविधा मुफ्त प्रदान कर रही हैं। ई-मेल बहुभाषी सेवा माध्यम है इसके लिए टंकण ज्ञान भी अनिवार्य नहीं है, अंग्रेजी भाषा के रोमन कुंजी पटल से कोई भी व्यक्ति ई-मेल कर सकता है। अब तो ध्वन्यात्मक लिप्यांतरण की अनूठी सुविधा का भी विकास हुआ है।

9. ई-कॉमर्स: (E-Commerce)

ई-कॉमर्स ने समग्र विश्व को विशाल मंडी में परिवर्तन किया है। इसके द्वारा छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी वस्तु खरीद और बेच भी सकते हैं। ई-कॉमर्स के माध्यम से किसी वेबसाइट को खोलकर उसे ऑर्डर दे सकते हैं और घर बैठे ही अपनी पसंद की चीज पा सकते हैं। इसका सीधा और सरल माध्यम क्रेडिट कार्ड है। ई-मेल की सुविधा अब हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषा में भी उपलब्ध हो गई है। लेकिन ई-कॉमर्स के द्वारा संपर्क बनाए रखने के लिए वांछित कंप्यूटर पर उसी भाषा का फॉन्ट होना आवश्यक है तब ही आप उसका प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन अब सी-डैक ने हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषा विकास के लिए 'विंडोज' के अंतर्गत कार्य करने के लिए 'इंटरफेस' विकसित किया है।

10. ई-फैक्स : (E-fax)

ई-फैक्स अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है। फोन संपर्क स्थापित कर फैक्स मशीन से भेजा जानेवाला दस्तावेज संपर्क स्थल पर प्रेषित किया जाता है और वांछित स्थान पर तुरंत फोटो कॉपी तैयार होती है। देश-विदेश में दस्तावेजों को तेजी से भेजने के लिए ई-फैक्स प्रणाली सस्ती हैं। फैक्स मशीन की तुलना में यह अधिक गतिमान प्रणाली है, जो दस्तावेजों को अधिक गति से प्रेषित करती है। इस कारण समय और धन की बचत होती है। ई-फैक्स का दोष यह है कि दस्तावेज भेजनेवालों को पहुँचे गए दस्तावेजों की सूचना तुरंत नहीं मिलती, सर्विस प्रोवाइडर द्वारा बाद में भेजी जाती है। ई-फैक्स मशीन का मूल्य भी अधिक है। फिर भी यह एक संदेश भेजने का गतिमान और विश्वसनीय माध्यम है।

11. ई-यूनिवर्सिटी

ई-यूनिवर्सिटी प्रणाली द्वारा यूनिवर्सिटी के ववविध संकायों में प्रदान किया जानेवाला ज्ञान इंटरनेट द्वारा डाऊनलोड कर सकते हैं इतना ही नहीं जिस व्यक्ति या प्रोफेसर ने यह व्याख्यान दिया है उसी रूप में उसे पढ़ा या सुना जा सकता है। बावजूद इसके विश्वविद्यालय के विभिन्न क्रिया-कलाप, नियम-उपनियम की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। विश्वविद्यालय में हो रही संगोष्ठियों को वीडियों को कॉन्फ्रेन्सिंग के द्वारा देख सकते हैं।

12. ई-बैंकिंग

ई-बैंकिंग के जरिए देश-विदेश के बैंक की किसी भी शाखा से जब चाहे वांछित रकम प्राप्त कर सकते हैं। इंटरनेट 'लॉगइन' कर चेक-बुक भी प्राप्त कर सकते

Scanned by CamScanner

हैं। आई-टी के क्षेत्र में बैंकिंग व्यवसाय महत्त्वपूर्ण देन साबित हो रहा है। इस सुविधा के अंतर्गत घर बैठे बैठे भी प्रकिया से जुड़ जाते हैं। आज ई-बैंकिंग के कारण हम तुरंत निधि अंतरण कर सकते हैं, रेल टिकट बुकिंग कर सकते हैं, ऑनलाइन बिल भुगतान कर सकते हैं, डिबेट कार्ड, एटीएम कार्ड की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। बैंक के कई काम ई-बैंकिंग सुविधा द्वारा होते हैं। रवि दिवाकर गिरहे के शब्दों में -''मानव संसाधन बैंकों का महत्त्वपूर्ण विभाग है, जिसमें बैंकों में नई भर्ती की जानकारी, प्रशिक्षण, स्थानांतरण प्रोसेस, स्टाफ का मूल्यांकन, स्टाफ संबंधी जानकारी, स्टाफ का वेतन, उनके भत्ते, वेतन वृद्धियाँ, छुट्टियों का ब्यौरा, स्टाफ का कार्यानुभव, कुशलता, कार्य निष्पादन शामिल हैं।''[4]

13. ई-मेडिसीन: (E-Medicincd)

आज चिकित्सा के क्षेत्र में भी इंटरनेट अद्भुत क्रांति लाया है। इंटरनेट द्वारा व्यक्ति देश-विदेश के तज्ञ डॉक्टरों या चिकित्सकों की सलाह ले सकते हैं। रूपचंद गौतम के मतानुसार-''भारतीय चिकित्सक अपना कंप्यूटर ऑन करके विदेश चिकित्सा पद्धति को समझ सकते हैं। देश- विदेश के प्रख्यात चिकित्सकों से सलाह ले सकते हैं। वर्तमान अस्पतालों में इंटरनेट के जरिए वीडियो सम्मेलन आयोजित करके बाकायदा चर्चाएँ की जाती हैं। जटिल-से-जटिल रोगों का इलाज किया जा सकता है।''[5] इस सुविधा को 'टेलीमेडिसीन' भी कहा जाता है। कहना आवश्यक नहीं कि विज्ञान और इंटरनेट के बढ़ते बदलाव के कारण आज चिकित्सा क्षेत्र में अनेक सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं।

14. ई- प्रशासन: (E-Administration)

पंचायत, जिला तथा राज्य स्तर पर सरकार और जनता के बीच संवाद का सरल माध्यम 'ई-प्रशासन' है। ई-प्रशासन के द्वारा आप विभिन्न प्रपत्रों को अपने कंप्यूटर पर भरकर सरकारी कार्यालयों को ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। इसके द्वारा जन्म-मृत्यु की जानकारी, पुलिस को शिकायत, सरकारी अधिकारी के पास सुझाव जैसे काम हम घर बैठकर सकते हैं। ई-प्रशासन के द्वारा प्रशासकीय कार्य एक ही बार में निपट जाता है। इस सुविधा के द्वारा प्रशासन अधिकारी विकास कार्य तथा अन्य कार्य की स्थिति-गति का जायजा जब चाहे ले सकता है और विचार-विमर्श भी कर सकता है।

15. ई-कन्ट्रोल: (E- Control)

इंटरनेट की इस सुविधा द्वारा विद्युत संचलित घरेलू उपकरण दूर बैठे भी कंट्रोल कर सकते हैं। इसमें कंप्यूटर और मोबाइल, टेलीफोन निरंतर सभी उपकरणों को जोड़ दिया जाता है और ई-कन्ट्रोल के द्वारा उपकरणों को ऑन और ऑफ करना संभव हो गया है। इस सुविधा के कारण घर में लगी आग, अनावश्यक धुआँ, अनधिकृत प्रवेश तथा शोरगुल होने पर विजुअल व ऑडिबल आलार्म अपने आप बज उठते हैं, और हम सुरक्षा की दृष्टि से सजग हो जाते हैं।

16. चैटिंग

वस्तुतः चैटिंग सुविधा ने लाखों किलोमीटर की दूरियों को खत्म कर दिया है। इंटरनेट की सहायता से स्थानीय कॉल रेट में इंग्लैंड, अमेरिका जैसे किसी भी स्थान पर होनेवाले व्यक्ति से कितनी भी देर तक बात कर सकते हैं। असल में यह लिखित संदेश भेजने की प्रणाली है लेकिन अब वॉयस चैटिंग का ही अधिक

Scanned by CamScanner

उपयोग हो रहा है। हजारों किलोमीटर दूर रहनेवाले किसी भी व्यक्ति से इंटरनेट और मोबाईल के सहारे घंटों तक बातचीत कर सकते हैं। अगर संगणक को कैमरा हो तो जिस व्यक्ति से आप बात कर रहे हैं उसे आप मॉनीटर पर देख सकते हैं। चैटिंग सुविधा का उपयोग देश-विदेश के विभिन्न भागों में बैठे युवक-युवतियाँ विशुद्ध बातचीत करते हैं। परिणामतः युवाओं का घंटों समय बर्बाद हो रहा है, जिसके कारण उन युवाओं का भविष्य खतरे में पड़ गया है। जो भी हो लेकिन देश-विदेश में आवश्यक वार्तालाप करने के लिए चैटिंग सुविधा द्वारा ज्यादा खर्च नहीं होता।

दरअसल इंटरनेट हमारे दैनंदिन क्रिया-कलापों में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। पहले कंप्यूटर तकनकी बाधा के कारण सिर्फ अंग्रेजी भाषा की रोमन लिपि में ही कार्य करता था लेकिन अब मानक कोड प्रणाली के निर्माण से हिंदी भाषा अपनाने में कोई कमी नहीं रही है। प्रौद्योगिकी के परिवर्तन के कारण डॉस, विंडोज और यूनिक्स के अंतर्गत शब्द संसाधन, डाटा संसाधन जैसे कार्य सुलभ हो गए हैं। शुरू में इंटरनेट पर अंग्रेजी का ही वर्चस्व था लेकिन अब हर देश अपनी-अपनी भाषा और लिपि में बिना रुकावट काम कर रहे हैं। भारतीय भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न फॉंट्स का उपयोग करते हैं। फॉंट्स की विविधता के कारण जब तक उपभोक्ता अपने कंप्यूटर पर उसी फॉंट्स को डाऊनलोड नहीं करता तब तक वह उसका उपयोग नहीं कर सकता। अगर फॉंट्स डाऊनलोड नहीं करेंगे तो हमें चित्र- विचित्र जंक चिह्न ही नजर आएँगे लेकिन अगर सभी संस्थाएँ तथा वेबसाइट एक ही फॉंट्स का उपयोग करेंगी तो यह बाधा नहीं रहेगी। सी-डेक पुणे संस्था ने भारतीय ग्यारह भाषा का फॉंट्स सॉफ्टवेअर उपलब्ध किया है, जिसके कारण फॉंट्स मानकीकरण की समस्या भी हल हो चुकी है। आज अमेरिका कंपनी ने तो सौ भाषाओं का 'ट्रांसपरेंट लैंग्वेज' भी तैयार किया है।

विश्व की पहली वेबसाइट नई दुनिया कॉम है। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला स्थान वेब दुनिया को मिला है, जिसके संस्थापक भी विनय छज़लानी है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का समन्वय का परिणाम है-वेबदुनिया। 'साइबर स्पेस' सूचना का अथांग सागर है, जिसमें अनेक संगणक और केबल संगणक में भरी हुई सूचनाएँ और सूचनाओं का परिवहन तंत्र होता है। लाखों कंप्यूटर अपने विचारों, सूचनाओं एवं आंकड़ों का शीघ्र ही आदान-प्रदान करने लगे हैं, भंडारण करने लगे हैं। आज इंटरनेट के कारण कार्यालयों में भी परिवर्तन हो रहा है। कार्यालयों में फाइलों एवं कागजों के ढेर कम हो रहे हैं। इतना ही नहीं कार्यालयों के आदेशपाल, लिपिक जैसे पद कम हो रहे हैं। अनेक व्यक्ति का काम एक ही व्यक्ति एक ही कंप्यूटर के जरिए कर रहा है। इसका अच्छा उदाहरण इन्फोटेक कंपनी है जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष के अलावा सिर्फ एक प्रधान सचिव काम करता है। आज कंप्यूटर के रखरखाव के लिए क्यों न हो लेकिन कार्यालय वातानुकूलित एवं वायुरुद्ध हो रहे हैं। कंप्यूटर का यह बदलाव निश्चय ही बेकारी जैसी नई समस्या को जन्म दे रहा है। कहना आवश्यक नहीं कि कार्यालय की साज-सज्जा और बनावट पहले से ज्यादा आकर्षक और साफ सुथरी बन रही है। कार्यकुशलता तथा कार्योत्पादन में बदलाव हो रहा है।

Scanned by CamScanner

टेलीकम्यूटिंग जैसी नई प्रणाली कंप्यूटर, लेपटॉप, पेजर तथा सेल्युलर फोनों के द्वारा 'संचार' तुरंत स्थापित कर रही है। बिल, प्रोजेक्ट, प्रस्ताव आदि का प्रत्युत्तर बटन दबाते ही दिया जाने लगा है। कंप्यूटर और टेलीफोन के सहारे 'सूचना हायवे' का विकास हुआ है। इलेक्ट्रॉनिक वस्तु के एकीकरण द्वारा शब्द, संगीत तथा चित्र, डिजिटल रूप में प्रकाश की गति से एक स्थान तक पहुँच रही है। पारंपरिक तांबे के तारों की जगह उपग्रह प्रणाली तथा फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क द्वारा 'सूचना महामार्ग' का विकास हुआ है जो प्रकाश की गति से मानव-जीवन के क्रिया-जीवन के क्रिया-कलापों में सहायता कर रहा है। इंटरनेट की गति संकेत देते हुए कैलाशनाथ पाण्डेय कहते हैं-''इंटरनेट पर प्रकाश की गति से सूचना, आवाज, चित्र और आँकड़ा तथा अन्यान्य की गति खबरों को कहीं भी आज भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से आज खेलकूद, सूचनाओं का प्रकाशन, परियोजनाओं की जानकारी, कार्यालय से दूर रहकर भी व्यवसाय करना, विश्व भर शिक्षण संस्थाओं, पुस्तक भंडारों, पुस्तकालयों के विषय में जानना, शैक्षिक उपकरणों, उत्पादों हेतु तकनीकी सहयोग, उत्पादों को बाजार में भेजना, बेचना, रेल, हवाई जहाज के लिए टिकटों का आरक्षण करवाना- कुल मिलाकर दुनिया की हर गली की जानकारी इंटरनेट के जरिए आज आसानी से उपलब्ध है।''[6] इंटरनेट के कारण दुनिया एक 'ग्लोबल व्हिलेज' (वैश्विक गाँव) बन गई है। आज का युग इंटरनेट का युग है। मानव जीवन में इंटरनेट का आविष्कार एक अनुपम उपहार सिद्ध हुआ है। इंटरनेट के कारण सूचना का संचार गतिमान हो गया है। इंटरनेट सर्व व्यापी सत्ता बन रहा है। यह एक इलेक्ट्रॉनिक संचार का अद्भुत करिष्मा है जो मनुष्य को उपयोगी सिद्ध हुआ है, इतना ही नहीं तो असीम ब्रह्मांड की समग्र जानकारी का दस्तावेज देने का उपहार बन गया है।

आज इंटरनेट का कार्य अनेक अच्छे दिशा संकेत दे रहा है। लेकिन इसके कारण कई इनसानों की जो दशा हुई है वह चिंतनीय है। इंटरनेट के सस्ते बाजार ने बड़े पैमाने पर उपभोक्ताओं को आकर्षित किया है। इंटरनेट के इसी सस्तेपन ने देह का खुला प्रदर्शन, अश्लील साहित्य का प्रसारण, कामुक भावना का उद्दीपन, नैतिक मूल्यों का अधःपतन, सामाजिक वैषम्य, स्वार्थांधता तथा भोगवादिता की वृत्ति बढ़ गई है। इस संदर्भ में कैलाशनाथ पाण्डेय कहते हैं-''असभ्य भाषा, गंदे संदेश और पोर्न के अबाधित प्रसार ने मानवीय संवेदनशीलता को अमानवीय बनाने का कुचक्र बड़े पैमाने पर शुरू कर दिया है। कामुकता और कामेच्छाएँ सामाजिक चेतना के केंद्र में आ गई हैं। इससे बच्चे बड़े पैमाने पर शिकार हो रहे हैं। पोर्न वेबसाइट खुल्लम खुल्ला मनुष्य के प्रति हेय भाव पैदा कर रही है। बच्चों और स्त्रियों का वस्तुकरण किया जा रहा है।''[7] इंटरनेट के माध्यम से सेक्सुअल पार्ट और पोर्नेग्राफी का भी इस्तेमाल होने लगा है। इंटरनेट के कारण ग्राहकों को खराब माल देना, फ्री गिफ्ट का लालच दिखाकर न देने जैसी धोखाधडी बढ़ गई है। आज व्यावहारिक शक्ल के लिए वित्तीय संसाधन जुटाना बड़ी चुनौती हो गई है। समाज की गरीब जनता इस इंटरनेट सुविधा से अछूती रह गई है। परिणामतः वे पारंपरिक साधन का उपयोग कर रहे हैं। वृद्ध लोग इस नई प्रणाली को सहजता से नहीं अपनाते। सूचना हायवे से गुज़रनेवाली जानकारी

Scanned by CamScanner

की चोरी हो जाती है इतना ही नहीं वह जानकारी वायरस के जरिए नष्ट भी की जाती है। इंटरनेट के कारण साइबर क्राइम, कॉपीराइट्स उल्लंघन के मामले बढ़ गए हैं और इस इलेक्ट्रॉनिक संजाल में मानव संपर्क की आत्मीयता और लगन नदारद हो गई है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि विश्वव्यापी वेब, टेली कॉन्फ्रेंस, एफ. टी. पी., इंट्रानेट, चैटिंग, ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-फैक्स, ई-यूनिवर्सिटी, ई-बैंकिंग, ई-मेडिसीन, ई-प्रशासन, ई-कंट्रोल, ई-वार्ता, ई-परामर्श, ई-वाणिज्य, ई-क्लॉथ, ई-गवर्नेंस और ई-कैश आदि इंटरनेट के दिशासंकेत हिंदी भाषा-भाषियों के लिए उपादेय सिद्ध हो रहा है। हमारे दैनंदिन क्रिया-कलाप में इंटरनेट उपयोगी हो रहा है। इंटरनेट के कारण आज विश्व एक 'ग्लोबल व्हिलेज' बन गया है। इंटरनेट की भाषा अंग्रेजी ही है ऐसी बात नहीं रही है। दुनिया में अंग्रेजी न बोलने वाले देशों का उदाहरण इस बात का साक्षी है कि इंटरनेट का प्रयोग करनेवाली 45 प्रतिशत आबादी अंग्रेजी भाषा को दूसरे दर्जे की भाषा मानती है। आज गैर अंग्रेजी भाषी लोग भी बड़ी संख्या में इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं और आनेवाले समय में तो भाषा की सीमा टूट जाएगी और हर इन्सान अपनी मातृभाषा में इंटरनेट का उपयोग करेगा। सूचना-प्रौद्योगिकी के गतिमान बनाने का काम भी इंटरनेट ने ही किया है। शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, कृषि, बैंकिग जैसे हर क्षेत्र में इंटरनेट का बोलबाला है। विक्रेता-उपभोक्ता के लिए तो इंटरनेट वरदान सिद्ध हुआ है। निश्चय ही इंटरनेट के दिशा संकेत मानव जीवन के लिए उपादेय सिद्ध हुए हैं। लेकिन आज कई दिशा संकेत दशा संकेत भी बन बैठे हैं इसके लिए मानव ही जिम्मेदार है क्योंकि इंटरनेट का उपयोग अच्छे काम के लिए करना है या बुरे काम के लिए यह बात तो उपभोक्ता अर्थात मनुष्य पर ही निर्भर है न? कहना आवश्यक नहीं कि आनेवाले समय में हिंदी भाषा के विकास में इंटरनेट जनसंचार का वह माध्यम बन जाएगा जो शरीर के लिए आत्मा का।

*** संदर्भ ग्रंथ सूची-**

1. सं. नीता गुप्ता - सूचना प्रौद्योगिकी हिंदी और अनुवाद, पृष्ठ-67 (भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली- 110 001, प्रथम संस्करण : 2004)
2. डी.डी. ओझा, सत्यप्रकाश - दूरसंचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी, पृष्ठ- 119-120, (ज्ञानगंगा, दिल्ली -110 006, संस्करण : 2007)
3. सं. नीता गुप्ता - सूचना प्रौद्योगिकी हिंदी और अनुवाद, पृष्ठ- 70
4. सं. विजय चंद्र मंडल - राजभाषा भारती, पृष्ठ -15, अप्रैल - जून 2007, (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।)
5. रूपचंद गौतम - संचार से जनसंचार, पृष्ठ - 165 (नटराज प्रकाशन, दिल्ली- 110 053, प्रथम संस्करण : 2005)
6. कैलाश नाथ पाण्डेय - प्रयोजन मूलक हिंदी की नयी भूमिका, पृष्ठ 328 (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-नई दिल्ली-पटणा, संस्करण 2007)
7. वही, पृष्ठ -367

****

Scanned by CamScanner